146
835
H
P
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1247
10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 835

891.431
V595

सत्या

(ले०—चौ० ते

मु० पारसौल डा० दनकौ

प्रकाशकः—हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा ।

Nizam Hyderabad Ke Satyagrah ka Itihas. by Chaudhury Tej Singh Verma.
Govt of U.P.
IMPERIAL RECORDS 2.2.42
Hindi
98 copy

॥ ओ३म् ॥

सत्याग्रह का इतिहास

रियासत का बिस्तार

पकड़ सहारा पार ब्रह्म का, जाबल्त राच रह्यो संसार।
वर्णन करूं हैदराबादी, निज़ाम के महा अत्याचार ॥
प्रथम स्वरूप कहूं रियासत का, सज्जन सुनो लगाकर कान।
पन्द्रह ज़िले अठारह कस्बे, बड़े बड़े पाँच नगर लो जान ॥
छोटे बड़े नगर सब मिलके, २२ हज़ार की तादाद।
नौ करोड़ जिसकी आमदनी, इतना राज्य हैदराबाद ॥
डेढ़ करोड़ की मर्दुमशुमारी, इस पर भी दीजेगा ध्यान।
९० फ़ी सदी हिन्दू जनता, दस फ़ी सदी यवन सन्तान ॥

इतिहास

लगभग दो सौ वर्ष पेश्तर, एक दम आसफ़जाह ने आय।
औरंगज़ेब का सेनापति जो, इस रियासत को लिया दबाय ॥
देख मर्दुमी आसफ़जाह की, नौरंगशाह मगन हो जाय।
जिसे निज़ामुल्मुल्क की पदवी, खुश होकर के दई गहाय ॥
इसके बाद पीढ़ी दर पीढ़ी, अपना अपना समय बिताय।
अब नव्वाब उस्मान अलीखाँ, अपना शासन रहे चलाय ॥

वर्तमान निज़ाम

सन् १८८६ में, लियो जन्म जगत् बिच आय।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 835
Date 22-12-71
GOVT. OF INDIA

१९११ के अन्दर, लियौ राज सिंहासन पाय ॥
यूनीवर्सिटी जो अलीगढ़ की, निकले बन ऊँचे विद्वान् ।
इङ्गरेज़ी उर्दू और संग में, सारी पढ़ीं हदीस कुरान ॥
जिनके शिक्षक मौलवियोंने, कर करके भारी अभिमान ।
उनके बारे में उन सबने, बिलकुल ऐसे किया बयान ॥
हमने बड़ी २ मेहनत से, और कर करके यत्न हज़ार ।
इस दुनियाँ में एक दूसरा, औरंगजेब किया तैयार ॥
औरङ्गजेब की भांति जगत में, दुनियां भरके दुःख उठाय ।
मुस्लिम जाती की सेवामें, तन, मन, धन सब देय लगाय ॥
औरङ्गजेब और निज़ामको, कहा मौलवियोंने एक समान ।
लेकिन इनमें बहुत फ़र्क है, सज्जन सुनो लगाकर कान ॥
औरङ्गजेब ख़ज़ाने को भी, अपनी प्रजा का धन जान ।
निजी ख़र्च के लिए उसको, था पैसा भी पाप समान ॥
कुरान लिखकर टोपी सीकर, करताथा अपनी गुज़रान ।
करो मुताला इतिहासों का, जिसको जाने सकल जहान ॥
मगर खज़ाने से निज़ाम को, लाखों रुपया मिले हरसाल ।
फिर भी नज़राने के ज़रिए, करे हिन्दुओं को पायमाल ॥
जाँय सेठों के निकल दिवाले, बिगड़ जांय सब जागीरदार ।
इसलिए नजरानेका उसपर, सबसे ज़बरदस्त हथियार ॥
इसी तरह बहुतेरे उसको, औरङ्गजेब का कहें अवतार ।
लेकिन बुद्धीसे देखो तो, औरङ्गजेब इसकाहि अवतार ॥
अगर दशहरे के मौके पर, कभी मोहर्रम भी आजाय ।
बाहर क्या घरमें भी हिन्दू, कोई बाजा ना सकें बजाय ॥

सड़क मुहल्ला या गली कूँचा, मस्जिद नाम मात्र भी होय।
तीन सौ गज के अन्दर २, बाजा बजा सके नहिं कोय॥
न्यायालों में अयोग्य अफ़सर, महज़ यवन होने के हेत।
हिन्दू लौ आँखों नहिं देखा, कैसा है काला या सेत॥
गाय का फोटो जो कोई बेचे, या घर में राखे चिपकाय।
रुपया पाँच सौ जुर्माना दे, और छः मास जेल को जाय॥
हिन्दू मन्दिरों से जो अब तलक, जागीरें लग रहीं अपार।
महन्त मर जाने के पीछे, रहतीं बोरड के अखत्यार॥
लेकिन उनमें जहाँ तक देखा, ज्यादातर होते इस्लाम।
जिससे ये उनका धन आता, सब मुस्लिम जनताके काम॥
ना मानो तो लो अब सुन लो, इसका भी दुखदाई हाल।
सौ मनुष्य इस धन के जरिये, जाते हैं हज को हर साल॥
गुण्डों द्वारा हिन्दू लड़के, और लड़कियाँ उड़ें दिन रात।
रोज़ पुलिस की देखती आँखों, किये जाँय कितने उत्पात॥
बहुतों का विश्वास है हिन्दू, मुस्लिम दङ्गों के दरम्यान।
हाथ पुलिस का ही होता है, यह भी मन में लीजे जान॥
हिन्दू लुटें पिटें हिन्दू ही, लगे हिन्दुओं के घर आग।
लेकिन फिर भी हर हालत में, मुसलमान रहते बे दाग़॥
यहाँ की बातें यहाँ ही रह गईं, अब आगे का सुनो बयान।
झगड़ा होगया गुलबर्गा में, हिन्दू मुस्लिम के दरम्यान॥
बना कमीशन निज़ामशाही, फौरन उसी समय तत्काल।
जो गुलबर्गा के दंगे की, करने चला जांच पड़ताल॥
तुर्त कमीशन ने वहाँ जाकर, बे इन्साफी को बिसराय।

तहकीक़ात कर करके दीए, मुसलमान दोषी ठहराय ॥
लेकिन इस पर भी निज़ाम ने, सारी तहकीक़ात दबाय ।
बिला शर्त केही उन सबको, एकदम दिया रिहा कराय ॥
ऐसेही बीर उदगीर आदि में, हिन्दू मंदिरोंके दरम्यान ।
अनगिन मूर्तियाँ तोड़ी गईं, फिर भी नहीं दिया गया ध्यान
इसीतरह जहांपर देखोवहिं,इस निज़ाम रियासतके मांहि ।
जान और माल हिन्दुओं का सब,कोई चीज सुरक्षित नाहिं।
हिंदू जाति के लिए वहाँ पर, सबसे बड़ी दुःख की बात ।
धार्मिक कृत्य नहीं कर सकते, पूरी आजादी के साथ ॥
नैतिक और आर्थिक बिलकुल, दोनों दशा बिगड़ती जांय ।
पर सुधारने का निज़ाम ने, कोई यत्न किया कभी नांय ॥
प्रजा टैक्सों के बोझे से, कष्ट भोगते हुए हज़ार ।
दिनप्रतिदिन पिसती जारहीहै,फिरभी कोई नहीं सुने पुकार ॥
निज़ाम की इमदादसेही अब,सारा वाणिज्य और व्यवसाय।
क़तई हिंदुओं से छुट करके, गया मुसलमानों में आय ॥

(२)

सत्याग्रह और उसके कारण

रोते रहे छः साल बराबर बिला ख़ता न सताये जाँय ।
हिन्दू जनता के ऊपर, ये जुल्म सितम न ढाए जाँय ॥
विनय पत्र यानी प्रार्थना, और कितनी देखीं दरख़्वास्त ।

मेमोरेण्डम और डेपूटेशन, फिरते रहे दिना और रात ॥
बहुत गिड़गिड़ाए और रोये, छोटे बड़े सभी नरनार ।
फिर भी हुआ जौंक का जैसे, पत्थर पर लगना बेकार ॥
लेकिन जब अत्याचारों का, यह दरिया होकर लबरेज़ ।
चला किनारों से बाहर को, भरता हुआ सरारे तेज़ ।
विवश होय सारे आर्य्यों की, सभा सार्वदेशिक ने आय ।
शोलापुर में कर आमन्त्रित, सभी आर्य्य लिए बुलाय ॥
२५दिसम्बर सन् ३८ को,सब विधि से पिण्डाल सजाय ।
लोकमान्य श्रीमान्य अणे जी,बैठे प्रधान पद पर जाय ॥
निज़ाम शाही जुल्म सितम के,विरुद्ध सत्याग्रह प्रस्ताव ।
सर्व सम्मति से पास होकर, आसानी से चलदी नाव ॥
जोकि आर्य्य समाज कल तक,था जिसका महा दुर्बल गात।
अपने घरेलू झगड़ों में ही, दुखी दीखता था दिन रात ॥
वही अहिंसा के अस्त्रों से, बिलकुल सजकर सर्व प्रकार ।
एक निर्भय योद्धा की भांती, दीख रहा मैदान मंझार ॥
जितना अधिक तपाया जाता, सोना अग्नि के दरम्यान ।
उतना ही बढ़िया बनता है, निश्चय मन में लीजे जान ॥
इसी भांति आर्य्य समाज भी, अपने बाल काल दरम्यान ।
महा विपत्ती झेल झेलकर, बनगया कुन्दन के अनुमान ॥
लेकिन एक लम्बे अर्से तक, सोता रहा पाँव फैलाय ।
इसी सबब से उसके अन्दर,थोड़ी गई शिथिलता आय ॥
सो भला हूजो अब निज़ामका,जिसने फिर झकझोर लगाय।
फिर बलिदान परीक्षा के लिये, वीर आर्य्य दीप जगाय ॥

उत निज़ामशाही भी अपना. पूरा २ जोर लगाय।
इन्हें कुचल देने के लीए, दल बल सहित डटी फिर आय॥
इत प्रस्ताव पास होते ही, फिर ना लगी पलक की देर।
उठा गर्ज कर सिंहासन से. वोह आर्य्य अधिनायक शेर॥
पूरी करा लेने के लीए. अपने दिल की सारी बात।
१५ दिन का नोटिस देदिया. निज़ामशाही को इक साथ॥

लेकिन जब १५ दिन तक भी. कोई करी सुनाई नाँय।
तो इतनी ला परवाही के. कैसे वाण सहारे जाँय॥
२२ जनवरी के भोर होते ही. जबर्दस्त करके ऐलान।
दिवस हैदरावाद मनाया, आरिज क्या हिन्दू सन्तान॥
३० जनवरी तक फिर रुक के, ३१ के होते ही भोर।
निज़ाम के अत्याचारों पर. सत्याग्रह ने देदिया जोर॥
किया आर्य्यों ने सत्याग्रह. क्यों निज़ाम रियासत के साथ।
इसके उत्तर में दिल देकर, सज्जन सुनो हमारी बात॥
यह सत्याग्रह शस्त्र हमारा. विन गोले गोली का फैर।
ना निज़ाम से कलह हमारी, और न मुसलमानों से बैर॥
बस इसका उद्देश यही है, आरिज क्या हिन्दू सन्तान।
अपने धार्मिक अधिकारों को. हासिल करे हरेक इंसान॥
इसलिए ना धन दौलत चहिये. ना निज़ामका तख्त और ताज।
ना निज़ाम के हाथी घोड़े. ना निज़ाम का चहिये राज॥
मिलें नौकरी के पद ऊँचे. उसकी भी कुछ नहीं परवाय।
मगर धार्मिक कृत्यों के बिच. पूरी आज़ादी मिल जाय॥
बिला रुकावट वेद धर्म का. पालन करें हरेक नरनार।

इसी तरह नौमी और होली, चाहे दिवाली भी आजाय
मगर मोहर्रम के मौके पर, कोई नहीं मनाया जाय ॥

तबलीग़ व तनज़ीम ।

यही पौलिसी है निज़ाम की, जो दिल में है रही समाय ।
जहां तक हो हिन्दू जाती को, जल्दी यवन बनाया जाय ॥
कहीं शफाखानों के ज़रिए, कहीं जेलखानों के मांह ।
कहीं लोभ लालच के बलसे, लाखों यवन बनाए जांय ॥
कहीं सेना कहीं पुलिसके द्वारा, इसबिध चली जारही चाल ।
मुसल्मान होतेहि अछूत भी, भर्ती किये जांय तत्काल ॥
कहीं छोटी छोटी क़ौमों को, हिन्दू धर्म से घृणा दिलाय ।
मुसलमान प्रचारक निशदिन, अपने दलमें रहे मिलाय ॥
दीन हीन हिन्दू के घर में, अगर चार बच्चे हैं आज ।
दूध का मोल चुका देते हैं, मुसलमान करने के काज ॥
कहीं अनाथ हिन्दू बच्चों को, यतीमखानों में भिजवाय ।
समर्थ हो जाने पर लेवें, उन सबको भी यवन बनाय ॥
रियासतके भीतर क्या बाहर, तबलीग़ और तनज़ीमका काम।
लाखों रुपया दे देकर उनकी, पूरी मदद कर रहा निजाम ॥
इसी तरह हिन्दू जाती पर, कर कर मन माने अन्याय ।
जितने कुछ अधिकार धार्मिक, वो सबके सब लिए छिनाय ॥

पूजा पाठ करने के काजे, ना नए मन्दिर सकें बनाय ।
और न पुराने मठ मन्दिर में, चूना ईंट सकें लगवाय ।
ना कोई किसी क़िस्म का जल्सा, न जलूस भी सकें निकाल ।

और न किसी जल्से का कोई, कहीं पर बाँध सकें पिण्डाल ॥
हवन कुण्ड खोदे या जो कोई, ओ३म् का झण्डा लेय लगाय ।
हाथ हथकड़ी पावन बेड़ी, सीधा चला जेल को जाय ॥
क़सरत काज अखाड़े खोदे, तिन पर तुर्त जुर्म लग जाय ।
प्राईवेट स्कूलों से भी घर घर, आपत्ति घहराय ॥
इसी तरह हिन्दू जाती पर, और सुनो महा अत्याचार ।
किसी नेक अवसर पर हिन्दू, कर नहीं सकें मंगलाचार ॥
कहीं तोड़े जा रहे जनेऊ, कहीं चोटी पर चलै कुठार ।
कहीं गुण्डा शाही के ज़रिये, बेजाँ बहे रक्त की धार ॥
वेद प्रकाश श्यामलाल आदि, जो कि आर्य्यों का परिवार ।
राल हकीकत की तरह वो भी, दिए मौत के घाट उतार ॥
बन्देमातरम् बोलने पर भी, करके बहुत बुरा बे हाल ।
सब हिन्दू जाती के बच्चे, स्कूलों से दिए निकाल ॥

शिक्षा की दशा

हिन्दू जाती की शिक्षा पर, निज़ाम ने देकर के ध्यान ।
किसी भाँति की भी सहूलियत, इनको नहीं करी प्रदान ॥
प्राईवेट संस्थाओं के बिलकुल, रस्ते में दिन रात ।
रोड़े अटकाये जाते हैं, कितने महा दुःख की बात ॥
जितने कुछ मजहबी मक़तबहैं, और जितने मजहबी स्कूल ।
तीस लाख रुपया जाता है, इस में नहीं जरा भी भूल ॥
मगर पाठशाला हिन्दीकी, सब रियासत भरसे दई तोड़ ।
ढूँढे एक नहीं मिलती है, जहां हजारों का था जोड़ ॥

स्कूल और कालिजों में क्या, हर जगह उर्दू की भरमार ।
और हिन्दीकी रियासतभरसे, दई बिलकुल बुनियाद उखाड़ ॥
निज़ाम रियासत में उर्दू के, कितने निकल रहे अखबार ।
मगर कनाडी या हिन्दी में, हुक्म नहीं देती सरकार ॥

जितने पुस्तकालय पबलिक के, सुन करके होगे बेताब ।
संस्कृत की या हिन्दी की, एक भी अच्छी नहीं किताब ॥
सब हिन्दू विद्यार्थियों को, कर बिलकुल हिन्दी से दूर ।
और उर्दू पढ़ने के लिए, बहुत किया जाता है मजबूर ॥
राज की जानिब से हिन्दी को, कोई सहायता मिलती नांय ।
लेकिन मुसलिम अखबारों को, बड़ी बड़ी मोटी रकमें जांय ॥
इस्लामी नुक़ते निगाह से, सारी लिखी गईं किताब ।
जिन में ऐसी एक बात नहीं, दें हिन्दू मूँछों पर ताब ॥

निज़ाम के सब फर्मानों का, बिलकुल यही मन्त्र है मूल ।
हिन्दू अपने हिन्दूपन को, बिलकुल जांय दिलों से भूल ॥
स्कूलों और कालिजों में क्या, जितने ग्रन्थ पढ़ाए जांय ।
उन में सब हिन्दू वीरों के, बिलकुल मजाक उड़ाए जांय ॥
भाषा बदली भाव बदल दिए, बदले खान पान पहरान ।
जिससे हिन्दू मुसलमान में, कोई नहीं कर सकता पहचान ॥
जिन शहरों के हिन्दू नाम थे, वे सब नाम निशान मिटाय ।
उनकी जगह जहाँ देखो वहिं, मुसलिम नाम दिए रखवाय ॥
दें पिछली तारीख गवाही, तुमको हो या न हो याद ।
जिसको भाग नगर कहते थे, अब उसे कहैं हैदराबाद ॥
इस लिए यहां तक पतन हो चुका, जब पैदा होती सन्तान ।

नाम मुसलमानी रखने में. लगे समझने गर्व महान ।।
कितने लोगों के ऊपर तो, यहाँ तक असर होचुका आज ।
तर्की टोपी लगा लगाकर, पाँच वक्त की पढ़े नमाज़ ।।
खून पसीने से सींचा हुआ, कठिन कमाई का जरमाल ।
लन्दनकी मस्जिद में और कहिं, कब्रोंपर कररहा कमाल ।।
फ़िलीस्तीन, कहीं मक्का मदीना, जिसकी सब रेतीली राह ।
इन्हीं हिन्दुओं के रुपये से, सजी औलिया की दर्गाह ।।
तीनसौं पेंतालीस प्रचारक, बड़े बड़े मुल्ला लिए राख ।
जिन पर खर्च किया जाता है, रियासत का रुपया दोलाख ।।
मुसलमान होने के कारण, ध्यान मुसलमानों का राख ।
दो सौ यवनों को सालाना, रुपया देता है दो लाख ।।
मस्जिद के हर एक इमाम को, आसानी से और भरपेट ।
बिला किसी हील और हुज्जत के, वेतन देती है स्टेट ।।
सारी मस्जिदों की मरम्मत, राज का रुपया रहा करवाय ।
मगर मन्दिरों के ऊपर कोई, कलस तलक नहिं सके चढ़ाय ।।
हिन्दू अफ़सर इस निज़ाम को, अपनी रियासत के दरम्यान ।
फूटी आँख नहीं भाते हैं, निश्चय मनमें लीजे जान ।।
बड़े २ ओहदों पर बाहर से, मुसलमान बुलबाए जाँय ।
मगर हिन्दुओं को कोई जगह, आसानी से मिलती नाँय ।।
जब किसी ओहदे के लिए इनपै, कोशिश और शिफारिश जाय ।
तो हिन्दू के बजा शिफ़ारिश, मुसलमान की माँगी जाय ।।
जिनके सोने और चांदी से, भरे खजाने बे परमान ।
वह तो सौ में ३० मुलाजिम, बाक़ी सब मुस्लिम संतान ।।

बिला रुकाब के कोई भी, कहीं करे उसका प्रचार ॥
बिला रुकावट रियासत भर में, सब समाज मन्दिर बन जांय ।
भीतर बढ़िया हवनकुण्ड और, ऊपर ओ३म् ध्वजा लहरांय ॥
इसी भांति हिन्दू जनता भी, नए मठ मन्दिर सकें बनाय ।
और पुराने मठ मन्दिर में, चूना ईंट सकें लगवाय ॥
प्राईवेट स्कूल हमारे, और पाठशाला खुल जांय ।
सब अपनी भाषा पढ़ें बच्चे, बिला रुकावट रियासत मांह ॥
जब तक सब अधिकार धार्मिक, हमको नहिं होंगे प्रदान ।
तब तक एक २ आर्य्य बच्चा, सत्याग्रह पर हो बलिदान ॥

१—म० नारायण स्वामी डिक्टेटर

महात्मा नारायण स्वामी, पहले डिक्टेटर का नाम ।
बूढ़े पिता भीषम की भाँती, करने चले घोर संग्राम ॥
ऊँचे स्वर से सत्याग्रह का; दर दर पर करते ऐलान ।
अब श्री स्वामीजी चल दिए, सङ्ग में ले चालीस जवान ।
सारे शहर में होते हुए, जब पहुँचे सुल्तान बज़ार ।
मय चालीस सत्याग्रहियोंके, स्वामी किए गए गिरफ्तार ॥
यहाँ की बातें अब यहीं रहगईं, और आगे का सुनो हवाल ।
जो श्री स्वामी जी के संग में, आकर चली पुलिस ने चाल ॥
पहली फ़रवरी को धोखे से, बिठा लारियों के दरम्यान ।
पुलिस ने आ छोड़ा स्वामी को, फिर शोलापुर के मैदान ॥
बस फिर क्या थी देर जहाँ ये, जुल्म सितम कर रहा निज़ाम ।
इस निज़ाम रियासत के अन्दर, अब छिड़गया घोर संग्राम ॥
भारत के भीतर क्या बाहर, जहाँ कहीं बसें आर्य्य बीर ।

बदल पैंतरा एक दम गह लई, सत्याग्रह रूपी शमशीर ॥
जलसे आदि सब काम जरूरी, सभी आर्यों ने दिए त्याग।
काम ज़रूरी कैसे भावैं. जिनके घर में लग जाय आग॥
अब इस धर्म युद्ध के लिए, जगह जगह भर्ती दई खोल।
संग संग धन संग्रह की भी, घर घरमें पड़ गई टटोल॥
चारोंतरफ से चलदिए योधा, अपनी बाँध २ के कोर।
ज्यों सावन भादों की भारी, सर पर घटा चढ़ै घनघोर॥
कोई पैदल कोई रेलों द्वारा, जहाँ जैसा मौक़ा पड़ा आय।
शोलापुर में लगे पहुँचने, कुछ तारीफ करी ना जाय॥
आत्माराम बोरना बासी, कठिन युद्ध का बीड़ा खाय।
निज़ाम रियासत में जा धमके, वो भी अपने शस्त्र उठाय॥
फेर करांची से चलने में, पलक मात्र की करी न टाल।
ग्राम अरनियां के बासी जो, योद्धा शूर बीर सुखलाल॥
कहीं बेधड़क वीर पृथ्वीसिंह, बांध अहिंसा की कृपाण।
निज़ाम हैदराबाद पहुँच गए, जै से लङ्का में हनुमान॥
तेजपाल और खज़ान दोनों, ये भी फ़ौरन पहुँचे जाय।
मानो राम लखन की जोड़ी, जो कर्त्ता ने दई बनाय॥
यहाँ की बातें अब यहीं छोड़ो, और आगे का सुनो बयान।
जहाँ नारायण को छोड़ा है, जा शोलापुर के दरम्यान॥
लेकिन फिर श्रीस्वामीजी ने, फौरन उसी समय तत्काल।
शोलापुर से चल देने में, एक मिनट की करी न टाल॥
अहिंसात्मक सत्याग्रह की, ले कर में बाँकी तलवार।
५ फरवरी को फिर होगये; जा गुलबर्गा में गिरफ्तार॥

बस फिर क्या थी देर वहाँ पर, ले स्वामीजी के इज़हार।
एक वर्ष की सख्त सजा में, भेज दिये गये कारागार॥
लेकिन फिरभी सबर न आया, और यहांतक किया अत्याचार।
ऐसे वृद्ध संन्यासी के भी, दी बेड़ी पैरों में डार॥
यहाँ की बातें यहाँ ही रहगईं, अब आगे का सुनो हवाल।
सत्याग्रहियों के सँग में भी, जो कुछ किए गए आमाल॥
जिन्हें जनेऊ पहने देखा, तुर्त गले से लिया उतार।
और संध्या करने वालों पर, अनगिन कोड़ों की भरमार॥
किसीके मुंहपर पुलिसने थूका, किसीके मुंहमें किया पेशाब।
मिर्च भरी और कहीं लकड़ी के, डण्डे ठूंसे गये जनाब।
समाज मन्दिर के अन्दर भी, कर करके मुर्गियाँ हलाल॥
और सत्याग्रहियों के मुंह में, दिया गया मांस तक डाल।
अब इस अग्नि परीक्षा के लिये, करते हुए धार्मिक जङ्ग।
एक के पीछे एक चल दिया, ज्यों दीपक पर गिरै पतङ्ग॥

२—चाँदकरण शारदा डिक्टेटर।

जेल में जाते ही स्वामी के, पलक मात्र की लगी न देर।
दूसरे डिक्टेटर भी चलदिये, शारदा चाँदकरण अजमेर॥
जिस दिन हिन्दू मना रहे थे, अपना होली का त्यौहार।
सत्याग्रह करते हुए होगए, जा गुलबर्गा में गिरफ्तार॥
निज़ामशाही ने उनको भी, तेरह मास की सज़ा सुनाय।
पहिले डिक्टेटर की भाँती, फ़ौरन दिया जेल पहुँचाय॥

३—ला० खुशहालचन्द खुरसन्द डिक्टेटर

एकसौ पचपन ले सत्याग्रही, कर सारे कामों को बन्द।

तीसरे डिक्टेटर भी चल दिए, ला॰ खुशहालचंद खुरसन्द।
२२ मार्च को गुलबर्गा में, पहुँचते ही होकर गिरफ्तार।
डेढ़ बरस की सख्त सज़ा में, सीधे पहुँचे कारागार॥

४—पं॰ धुरेन्द्र शास्त्री डिक्टेटर

इसी तरह से सत्याग्रह के, चौथे डिक्टेटर श्रीमान्।
पण्डित धुरेन्द्र शास्त्रीजी ने, हैदराबाद को किया पयान॥
मार्ग में स्पेशल द्वारा, बीस इक्कीस अप्रैल बिताय।
और बाईस की ठीक सवा बजे, गुलबर्गा में पहुँचे जाय।
बस गुलबर्गा में जाते ही, फिर ना लगी पलक की देर।
मय ५०० सत्याग्रहियों के, बाँध लिया स्यारों ने शेर॥

५—पं॰ वेदवृत्त डिक्टेटर

पाँचवें डिक्टेटर बिहार के, पण्डित वेदवृत्त महाराज।
पाँचसौ पन्द्रह ले सत्याग्रही, चलदिए बाँध सुमतिके साज॥
पाँच मई को पुसद केन्द्र से; करते हुए वेद प्रचार।
निज़ाम हैदराबाद के अन्दर, ये भी किए गए गिरफ्तार॥
१३ मई को दो दो बरस की, दिया सज़ा का हुक्म सुनाय।
एक सौ तेरह सिपाहियों को, कुछ कम पर ही दिया टरकाय॥

६—श्रीकृष्ण डिक्टेटर

छठवें डिक्टेटर भी ऐसेहि, योद्धा श्री कृष्ण लाहौर॥
एक हजार सत्याग्रही सँगले, बाँध लिया माथे पर मौर।
ये भी स्पेशल के द्वारा, कर अपनी पूरी रफ्तार॥
हैदराबाद के मैदानों में, जो जाते ही होगए गिरफ्तार।
अब औरङ्गाबाद जेल में, आई सात जून की रैन।

सत्याग्रहियों के बारे में, सुनिए महा दुख के बैन ॥
सब भूखे सत्याग्रहियों पर, सारे दिन बिन दिए अहार ।
महा भयङ्कर होने लग गया; लाठी डण्डे का प्रहार ॥
दूसरे दिन से फिर इन सबको, खाना मिलन लगा इकबार ।
लेकिन इतना रूखा सूखा, पेट में पहुँचाना दुश्वार ॥
जब इनको भोजन देने में, होने लगा ये अत्याचार ।
तो इन सब सत्याग्रहियों ने, सोने से कर दिया इन्कार ॥
बस फिर क्या थी देर जेल में. चारसौ गारद लई बुलाय ।
और हथियार बन्द एक दम से, बेतादाद पुलिस गई आय ॥
आते ही एक दम पड़ने लग गई, अब लाठी डण्डोंकी मार ।
कहिं बन्दूकों के कुन्दों से, कहिं पछियों से दिये पछार ॥
किसी के टूटे हाथ पैर और, कोई लहू से होगया लाल ।
तो फिर सबको खींच खींचकर, दिया बारगों के बिच डाल ॥
ना खाने को रोटी दी गई, ना पानी का पूछा हाल ।
ना कहीं जख़मी को पहुँचाया, किसी शफ़ाख़ाने के नाल ॥
एक घायल बोला बिन पानी, प्राण हमारा निकला जाय ।
इसलिए मुझ मरते हुए को, कोई पानी तो देव पिलाय ॥
करके क्रोध कहा जालिम ने, पानी एक बूंद मिले नाँहि ।
माफ़ी माँगो मिल सकती है, हम सब कसम खुदा की खाँय ॥
इतनी सुन सत्याग्रही बोला, चाहें प्राण रहें चाहे जांय ।
हम सन्तान आर्य्यों की हैं, हर्गिज मांफी माँगें नांय ॥
अंगुल २ चले कटारीं, दो दो अंगुल पर तलवार ।
वीर क्षत्रियों के जाए हैं, माँफी माँगन को धिक्कार ॥

पं० ज्ञानेन्द्र जी

सातः पण्डित ज्ञानेन्द्र जी भी. मनमें सुमर श्री ओंकार।
मय एकसौ सत्तर सत्याग्रही, फौरन जा होगए गिरफ्तार॥

पं० विनायकराव जी

पं० विनायकराव बैरिस्टर, आठवें डिक्टेटर का नाम।
बाईस जौलाई को जाकर, थे करने वाले संग्राम॥
इतने हि सभा सार्वदेशिक का, टेलीग्राम गया था आय।
जिसने कुछ दिन तकके लिये, सत्याग्रह दिया बंद कराय॥

[३]

वीरों का बलिदान भीमराव

यहाँ की बातें यहाँ ही रहगईं, अब आगे का सुनो बयान।
बारी २ से जिस भाँती, जितने वीर हुए बलिदान॥
हुपला गाँव जिला बीदर में, भीमराव का जन्मस्थान।
माणिकराव मित्र एक उनका, था दोनों में प्रेम महान्॥
शुद्ध किया उनकी भगिनी को, हरेक जगह करके ऐलान।
इसी बात पर भीमराव की, शत्रु बनी यवन सन्तान॥
इसी बात पर हमला करके, इनके घर में देदो आग।
और एक दम से भीमराव के, दी गोली सीने पर दाग॥

वेद प्रकाश

शहर गुंजौटी पर मोहित हो. निज़ाम रियासतसे चितलाय।
शिवबप्पा महादेयके घर में, वेद प्रकाश जन्म लिया अया।

इसी अकेले की हिम्मत पर, गुञ्जौटी में खुली समाज।
और यही योद्धा सिखलाता था, लाठी तलवारों के काज॥
इस योद्धा की इसी बात पर, मुसलमान सब गए रिसाय।
और इसके सब दुश्मन बनकर, टेढ़ी रखने लगे निगाह॥
एक दिन सम्वत् चौरासी में, कुछ यवनों ने मौक़ा पाय।
और मन्त्री आर्य्य समाज के एक दम घरको घेरा आय॥
लेकिन वेदप्रकाश वीर ने, कोई आव गिना ना ताव।
तुर्त निहत्था ही घर दौड़ा, जिससे उनका लग गया दाव॥
एकदम घर के पास पहुँचते ही, कई सौ यवनों ने लिया घेर।
निर्भयता से लड़ता हुआ, मारा गया अकेला शेर॥

पं० श्यामलाल जी

ऐसे ही पण्डित श्यामलाल जी, अपने इस नरतन को धार।
जब तक जीए इस दुनियाँ में, करते रहे वेद प्रचार॥
हारी बात कभी नहीं बोलें, चाहे दुःख भोगे बेतादाद।
और बड़ी निर्भयता से कीया, अत्याचारियों का प्रतिवाद॥
इसलिए स्टेट के अधिकारी, जो थे बड़े २ ओहदेदार।
वह सब इनके पीछे पड़ लिए, रचने को षड़यन्त्र हज़ार॥
जबकि दशहरे के मौक़े पर, उदगीर में दङ्गा हुआ आय।
श्यामलाल को गिरफ्तार कर, बीदर जेल दिया भिजवाय॥
फिर रचकर षड़यन्त्र क़त्ल का, तुर्त मुकदमा दिया चलाय।
अमानुषिक अत्याचारों से, दिया जेल में ही मरवाय॥

सत्य नारायण

गांव अम्बोल ज़िला बीदर में, रखा सत्य नारायण नाम।

आर्य्य समाज के कामों में, रहन लगा हर आठों याम ॥
सिवाय इसके उनके अन्दर, और नहीं थी कोई बात ।
फिरभी मुसलमान सबके सब इनसे,जलन लगे दिनरात॥
एक रोज़ किसी काम ज़रूरी, चले जा रहे थे बाज़ार ।
वहां मोहर्रम के खेलों में, यवन घुमा रहे थे तलवार ॥
मौक़ा देख एक ज़ालिम ने, जो पहले से था तैयार ।
सरे आम और सबके सन्मुख,दिया सत्यनारायण मार॥

धर्म प्रकाश

धर्मप्रकाश वीर कल्याणी, ऊँचे दर्जे का बलवान ।
शस्त्र चलाने सिखलाता था, समाज मन्दिरके दरम्यान॥
इसलिए कितने मुसलमान, और ख़ाकसार पार्टी तमाम ।
इनके पीछे २ लग लिए, सबके सब हर आठों याम ॥
कई बार बचे इनके बलसे, आख़िर कब तक मिले निजात ।
जब भाले बर्छी बाँधे हुए, फिरें दुशमनों के दल साथ ॥
बस एक दिन दसबजे रातके, ये समाज मन्दिरसे होय ।
समाज से घर को आरहे थे, आधा शहर रहा था सोय॥
एक हथियार बन्द जत्थेने; इनको पकड़ लिया एकसाथ ।
बर्छी भाले तलवारों से, इनका जीवन किया समाप्त ॥

रामा

रामा पावसी का बासी था, और अछूत जातिका लाल ।
जो कि धर्मियों पर मरता था, और अधर्मी का था काल ॥
नगर पावसी के पठान सब, एक दिन हुए इकट्ठे आय ।
मंदिर तोड़नेका हिंदुओं को, दिया इसबिधि ऐलान सुनाय ॥

शूरमाहो सो सन्मुख आवे, और मन्दिरको लेय बचाय ।
इतनी बात सुनी जब उनकी, हिन्दू लोग गए घबराय ॥
अपने २ घर में छिप गए, अपनी २ लेकर जान ।
लेकिन रामाकी रग २ में, अब लगा रक्त झकोले खान ॥
बस उस मन्दिर की रक्षा में, रामा भूखे सिंह समान ।
कूद पड़ा मैदान जङ्ग में, अपनी हथेली पर ले जान ॥
बेख़ौफी से लड़ते लड़ते, कई गोली का बना निशान ।
मरते २ मन्दिर बचा लिया, और सब दिए भगा पठान ॥

महादेव

साकौली आर्य समाज का, नित करते करते सत्सङ्ग ।
धीरे धीरे महादेव पर, वैदिक धर्म का चढ़गया रङ्ग ॥
अबये महादेव उसी धुनमें, हरदम दिन और रात इकसार ।
अपने सब कामों को तजकर, करने लगा वेद प्रचार ॥
इसलिए अब यवनों के हमले, होन लगे उस पर लगातार ।
पर वह अपने पराक्रम से, बचता ही रहा बारम्बार ॥
आख़िर एक दिन महरअली ने, पीछे से आकर चुपचाप ।
छुरा भोंक कर शहीद कर दिया, पापी ने करके महापाप ॥

वैंकटराव आठवें योधा, कर कांग्रेस से प्रेम महान ।
जेल निजामाबाद में जाकर, कर सत्याग्रह दे दिए प्राण ॥
इसी तरह से हथियारों की, दे दे बेरहमी से मार ।
चञ्चल गुड़ा जेल के अन्दर, ब्रह्मानन्द को दिया मार ॥
इसी तरह से सत्यानन्द को, हैदराबाद जेल में जाय ।

बड़े बड़े कष्टों की भट्टी में, फ़ौरन दिया भस्म कराय ॥
ज्यादा कौन बढ़ावे गाथा, निज़ाम रियासत के दरम्यान ।
इसी तरह से हुआ ग्यारहवां, विष्णु भगवन्त का बलिदान ॥
ज़िला मैनपुरी अलालपुर के, छोटेलाल का सुनो हवाल ।
खान्दान के उत्तरऽधिकारी, माता के इकलौते लाल ॥
गुलबर्गा के सत्याग्रह में, धुरेन्द्र राज गुरू के साथ ।
उसी जगह पर उसने अपना, जीवन नाटक किया समाप्त ॥

इसी तरह से वीर अर्जुनसिंह, २६ जून शाम की जोर ।
सूरज छिपे बाद जा रहे थे, निर्भय चले शहर की ओर ॥
अकस्मात अब्दुल्ला आदी, यवनों ने गोल बनाय ।
और साढ़े नौ बजे रात के, इनको एक दम घेरा आय ॥
एक दम मिट्टी झोंक आँखों में, कर सिर पर लाठी का वार ।
छुरा भोंक दिया छाती में, जिस से गए परलोक सिधार ॥

(४)

आर्यसमाज की परीक्षाएं

अग्नि परीक्षा का अवसर है, घबराने का नहिं कोई काज ।
ऐसे ही तीन बार पहले भी, उत्तीर्ण हो चुका समाज ॥
पहली परीक्षा वह थी प्यारे, जिस समय ये भारत सरकार ।
बाग़ी समझ करके समाज को, करन लगी थी अत्याचार ॥
कहीं बाप रह गया तड़फता, कहीं भटकता जा फ़रज़न्द ।

लाला लाजपतराय को जिस दिन, क़िले मांडले कीया बन्द ॥
ज्यादा किस्सा कौन बढ़ावे, सारी बातों का यही सार।
सब से पहले इस समाज से, गोरी गवर्नमेंट गई हार ॥
दूसरी बार परीक्षा जो हुई, सज्जन सुनो लगाकर कान।
पटियाले का मुकद्दमा था, जिसको जाने सकल जहान ॥
जिसमें अनेक आर्य नेता, ज्वाला प्रसाद से श्रीमान्।
आर्य्य धर्म की रक्षा के लिए, सहे जेल के कष्ट महान् ॥
इसके बारे में भी ऐसे ही, ज्यादा कौन बढ़ावे लेख।
पटियाले की गवर्नमेंट भी, सब विधि से नीचा गई देख ॥
तीजी परीक्षा फिर हुई इसकी, राज धौलपुर के दरम्यान।
जिस रियासत का बड़ा तास्सुबी, काज़ी अज़ीजुद्दीन दीवान ॥
समाज मन्दिर पर ज़बर्दस्ती, अपना कब्ज़ा लिया जमाय।
हवन कुण्ड की जगह जहाँ थी, वहाँ पाखाना लिया बनाय ॥
अब समस्त आर्य जनता का, क्या जवान बूढ़ा क्या बाल।
क्या स्त्री क्या पुरुष सभी का, खून खौल उठा ततकाल ॥
जिससे धौलपुर की रियासत को, हरेक तरह होकर लाचार।
बुरी तरह आकर झुकना पड़ा, आर्य्यों के सन्मुख सौ बार ॥
खुद दीवान अज़ीजुद्दीन ने, नया समाज मन्दिर बनवाय।
और मन्दिर मय हवन कुण्ड के समाजियों को दिया गहाय ॥
इसी तरह हिन्दू जाती पर, ये निज़ाम का अत्याचार।
चौथी परीक्षा है समाज को, भली भांति जाने संसार ॥
उसी समाज ने फिर निज़ाम के, अत्याचारों के प्रतिकूल।
सत्याग्रह का बिगल बजाया, इसमें नहीं ज़रा भी भूल ॥

जहाँ अनेक सत्याग्रही उतरे, हँसते हुए मौत के घाट।
और अनेक योधा ऐसे ही, जेलों मांहि सड़े दिन रात॥
लेकिन ईश्वर की कृपा में था हमको पूरा विश्वास।
चौथी परीक्षा में भी देखो, हैं पूरे नम्बरों से पास॥

मुस्लिम उलमाओं के उद्गार

निज़ाम हैदराबाद की बाबत, हसन निज़ामी के सुनो बैन।
जिनकी ज़हरीली बातों से, पत्थर भी होते बेचैन॥
इसी जनवरी अट्ठारह को, शहर गाज़ियाबाद मँझार।
हसन निज़ामी सबके सन्मुख, यूं कह रहे पुकार पुकार॥
ये निज़ाम साहब की ग़लती, मेरे मनमें नहीं समाय।
छः सौ बत्तीस बरसों में भी, हिन्दू यवन बनाये नांय॥
निज़ाम ने यह ग़लती करके, बहुत बड़ा किया अपराध।
इसी सबब से चक्कर में है, सारा निज़ाम हैदराबाद॥
अगर ये रियासत भरके हिंदू, मुसलमान होते सब आज।
९० फ़ी सदी अधिकारों की, किसके दिलमें उठती खाज॥

और कितने तो यूं कहते हैं, अपने उपदेशों के मांहि।
ये रियासत तो इस्लामी है, नवाब साहब के घरकी नांहि॥
इसलिए इसमें निज़ाम को भी, ऐसा एक नहीं अख़्तियार।
ग़ैर मुस्लिमोंको जो दे दे, सब कुछ मन माने अधिकार॥
इसलिए अगर किसी ने इसको, ज़रा भी देखा आँख उठाय।
तो पलमें ईरान आदि सब, मुस्लिम देश झलू में आय॥

अब चलो, तुमको लेचलते हैं; इस शोलापुरके दरम्यान।
जहाँ बहादुर यारजङ्ग का, हुआ फर्गारी में व्याख्यान॥
बीस हज़ार हिन्दु जनता को, लीया जिसने यवन बनाय।
सो अपने उपदेशों द्वारा, रहा पब्लिक को यूँ भड़काय॥
रोज़ क़यामत के हुज़ूर का, मैं दामन पकड़ूंगा जाय।
और ये पूछूँगा हुज़ूर से, इसका दीजे भेद बताय॥
रक्खा क़ाफ़िरों को क्यों बाक़ी, अब तक बिना किए इस्लाम।
जो रियासत भर में दे रहे हैं, अब हमको तकलीफ़ तमाम॥

मौलाना सद्दीक नाम के, जो बसें आसफ़नगर मँझार।
उनकी भी बातें सुन लीजै, ज़हर उगल रहे जिस प्रकार॥
अरे मुसलमानों सब सुनलो, अच्छी तरह लगाकर कान।
इसमें क्यों गफ़लत करते हो, जो कह रहीं हदीस कुरान॥
जैसे हज नुमाज़ और रोज़ा, और रोज़े के सङ्ग ज़कात।
इसी तरह से जहाद भी है, सबसे मुख्य पाँचवीं बात॥

आर्य धर्म का झण्डा

विजय पावे, विजय पावे, ये आर्य्य धर्म का झण्डा।
जगत के व्योम में छावे, ये आर्य्य धर्म का झण्डा॥
यही ध्वज 'राम' का प्यारा, यही 'घनश्याम' का प्यारा।
'सिकन्दर' भी जहाँ हारा, ये आर्य्य धर्म का झण्डा।
'हर्ष' और 'भोज' का प्यारा, उड़ा विक्रम के बल द्वारा॥

मिटे "शक" दब गया "दारा", ये आर्य धर्म का झण्डा ॥
'शिबा' "गोविन्द" के कर में, उड़ा था घोर सङ्कर में।
चढ़ा था यवनों के घर में, ये आर्य्य धर्म का झण्डा ॥
इसे "राना" ने सम्माना, इसे "ताना" ने पहचाना।
इसी पर मर मिटा "नाना", ये आर्य्य धर्म का झण्डा ॥
गगन चुम्बी हिमालय पर, उड़ायेंगे ध्वजा घर घर।
दिखाए त्याग का जौहर, ये आर्य्य धर्म का झण्डा ॥
गढ़ेगा गङ्ग के तट पर, अड़ेगा विश्व के बट पर।
लड़ेगा न्याय के पथ पर, ये वैदिक धर्म का झण्डा ॥
ये जैनी, बौद्ध, सिख सारे, इसी झण्डे के हैं प्यारे।
कभी होंगे नहीं न्यारे, ये आर्य धर्म का झण्डा ॥
बढ़ेंगे बाल अरु बाला, लिये ध्वजहेतु जयमाला।
करेगा "दास" मतवाला, ये वैदिक धर्म का झण्डा ॥

युद्ध-गीत

बज्र गिरे, तारागण टूटें, धरा-धाम फट जाने दो।
बरसे आग तलातल डूबें, सिन्धु अटे अट जाने दो ॥
कट कट कर अपने अङ्गों की, रुधिर धार बह जाने दो।
क्रूर की कुत्सित-कृपाण को, शोणित सर में न्हाने दो ॥
पत्थर सहो, गालियाँ सुनलो, तेग-तमन्चे चलने दो।
पर कर्त्तव्य-कर्म से बीरो, मन न कदापि बिचलने दो ॥

वही वीर जीवित रहते हैं, जो कटु—कष्ट उठाते हैं।
बलि प्रदान करने के कारण, वेदी पर चढ़ जाते हैं॥
प्राण त्यागते हंसते हंसते, मोह न मन में लाते हैं।
उपजाने को अगणित-अगुआ, बीज रूप मिल जाते हैं॥
मर कर अमर करें जीवन को, ऐसे वीर बढ़ो आओ।
धर्म क्षेत्र में असि धारा की, निर्भय भेंट चढ़ो आओ॥
अटल प्रतिज्ञा धारी योद्धा, बन चट्टान अड़ो आओ।
कर्म योग की प्रबल वन्हि में आहुति-रूप पड़ो आओ॥
ऋषि शोणित से सञ्चित होकर, जो फुलवारी फूल रही।
वैदिक वायु—विकम्पित देखो, झुक झूमर सी फूल रही॥
जिसकी सुखद सुगन्ध विश्व को, बना रही है मस्ताना।
मिटने कभी न देना उसको, चाहे तुम खुद मिट जाना॥

सच्चे वीर का स्वर्ग।

ख्याल।

प्रथम आधी रात का, महा घोर अंधियार।
कभी कभी बैरन बीजरी, चमक रही असरार॥
एक युद्ध क्षेत्र के बीच जहां पर, असंख्य योद्धा पड़े हुए।
कोई तड़प रहे, कोई ऐंठ रहे, अधमुए और कहिं मरे हुए॥
दिन भर के लोहू लुहान से था, युद्ध-क्षेत्र सब रचा हुआ।
गीदड़ोंकाऔर कहीं कुत्तोंका, भारी कोलाहल मचा हुआ॥
कोई रुधिर के कीचड़ में फँसकर, अपनी जान गवां रहे हैं।
और प्यासमें अपने लोहूसे, खुद अपनी प्यास बुझा रहे हैं॥

इतने ही में भैंसे पर सवार, यमराज सामने आ टूटे।
योद्धा ने कहा तुम कौन हो तो, यमराज भी ऐसे कह छूटे॥
यमराज हूँ मैं, महा काल हूँ मैं, कालों को भी हाल हराता हूँ।
इस दण्ड से मैं तुझ जैसों को; एक पल में स्वर्ग पठाता हूँ॥
इतना सुन करके योद्धा की, आँखों में खून उतर आया।
उठना चाहा तो उठा न गया, फिर इस प्रकार से फर्माया॥

टेक

हो अगर तुम्हीं यमराज, तो गई धोखे में उमर मेरी।
मैं तो जानता था कभी किसी से न डरते हो तुम।
और हमेशा तलवारों की छाया में बिचरते हो तुम॥
यह भी जानता था कभी, दुर्बल हो न दीन हो तुम।
और हमेशा जग में, मारू राग के शौक़ीन हो तुम॥
लेकिन तुम यमराज नहीं, और न महाकाल हो तुम।
शूरवीर और न शूरवीरों की मिसाल हो तुम॥
क्यों कि इस समय पर जब, अख़ीरी साँस आरहे हैं।
कुत्ते और गीदड़ हमको नोंच नोंच खा रहे हैं॥
फिर भी इस अँधेरी में, चोरों की भाँति आते हो तुम।
और बड़े घमण्ड से इस दण्ड को दिखाते हो तुम॥
कर भृकुटी टेढ़ी॥ हो अगर तुम्हीं० ॥१॥
लेकिन अब क्या करूं जबकि इस कदर लाचार हूं मैं।
बिना हाथ पैर का गदेला बिन हथियार हूँ मैं॥

नहीं थी ज़रूरत मुझे, कोई मेरे साथ होता।
बस मेरी तलवार का ही कब्जा मेरे हाथ होता॥
तो मैं देखलेता तुम्हें कितने शूर वीर हो तुम।
भीम हो या भीष्म हो या, कर्ण बेनज़ीर हो तुम॥
बिना जांच किए तुम्हें, हर्गिज़ नहीं जाने देता।
और अपनी तलवार की कसौटी पर ही जाँच लेता॥

सारी अकड़ तेरी॥ हो अगर०॥२॥

तुम जो कहते हो कि तुम्हें, स्वर्ग में लेजाऊँगा मैं।
और स्वर्ग के सर्वोपरि, सिंहासन पर बिठाऊँगा मैं॥
लेकिन जिस स्वर्ग में बढ़िया, बैठने को आसन मिलें।
पञ्चदशी कामनी दिन रात खड़ी सेवा करें॥
उस जगह ता आलसी अपाहजों को लेजाइएगा।
या उसमें विषय के दन्दे, कीड़ों को बसाइएगा॥
ऐसा स्वर्ग शूरवीर योद्धाओं का स्वर्ग नहीं।
होगा तो महा आलसी अपाहिजों का होगा कहीं॥
योद्धाओं का स्वर्ग तो यही है, दिन रात जहाँ।
दोनों ओर से होते हों, घात प्रति घात जहाँ॥

बजती रण भेरी॥ हो अगर०॥३॥

योद्धाओं का स्वर्ग फ़क़त तलवारों के वार में है।
स्वर्गीय सङ्गीत भी तलवारों की झनकार में है॥
खाई और खन्दकों को अपना महल मानते हैं।
आहत होकर सर कटाकर सर्व सुख जानते हैं॥
काँटों के कठोर आसन, फूलों के समान हैं सब।

कुत्ते और गीदड़ इनके मित्र और महमान हैं सब ॥
स्वर्ग की नरसैनी इनकी टूटी हुई तलवार है ।
स्वर्ग में पहुंचाने को जो बड़ी तेज़ रफ्तार है ॥
करती नहीं देरी ॥ हो अगर तुम्हीं० ॥४॥

यह तो सब सही लेकिन एक दुःख रहा हमें ।
तुम्हारे इस प्रहार का कुछ उत्तर न दे सका तुम्हें ॥
क्योंकि जब किसी ने कभी, मुझ पर था प्रहार किया ।
तो एक के बदले में दस देकर बदला तार दिया ॥
लेकिन अब क्या करूँ जबकि इस तरह लाचार चला ।
इस तुम्हारे प्रहार का होकर क़र्ज़दार चला ॥
कहे 'तेजसिंह' है इसी से चिन्ता बढ़ी हुई ।
और इन्हीं ख़यालों के, चक्करमें बुद्धी पड़ी हुई ॥
आ रही चक्करफेरी ॥ हो अगर तुम्हीं० ॥५॥

कवित्त--

घोर अन्धकार देश भारत में छायो आय हुई थी।
अलोप किरण वेद रूप रवि की ॥
आँधी की भांति ये ईसाई और मुसलमान रहे थे।
उखाड़ जड़ हिन्दू मज़हब की ॥
कहै तेजसिंह इस अत्यन्त आन्दोलन से यह उत्तम।
वेदोक्तरीति मिट करके कबकी ॥
चारों वर्ण धर्म छोड़ कलमा नमाज पढ़ते स्वामी जी।
न आते तो सुन्नत होती सबकी ॥
टेक—दयानन्द की दया से आज, देश ने फिर आँखें खोलीं ॥
देश की सुनो तो बातें सुनने को उठाओ पलक।
सृष्टि के शुरू से पृथ्वीराज के ज़माने तलक ॥
यह वही देश है जो सारे देशों का सिरताज रहा।
न्याय और दया के बलसे करता सब पर राज रहा ॥
लेकिन कुछ दिन पीछे अपने घर२ में लगाके आग।
अपने ही हाथों से यहां लो फोड़ बैठा अपने भाग ॥
मारवाड़ मेवाड़ कहीं पानीपत के मैदान में।
दीग और भरतपुर दिल्ली आगरे के दरम्यान में ॥
जो कुछ दशा हुई दिल में कहाँ तक छिपा कर राखूं।
सात सौ बरस तक दिन दिन खून की नदी में लाखों ॥
लाश बहीं डोलीं ॥ १ ॥
लेकिन दयानन्द की फिर दया से होने लगी भोर।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 835
Date 22.12.71
GOVT. OF INDIA

और कहीं गान्धि की भारी आँधी ने मचाया शोर ।।
ऐसी आँधी उठी जो बिदेशी सारे बादलों को ।
पल में चीर फाड़कर बल देने लगी निर्बलों को ।।
बिना ही बादल के बस आकाश जल बरसाने लगा ।
जिससे सूखो सदियों का बगीचा फिर लहराने लगा ।।
ओसके कणों से कुदरत मोती जैसी माँग चुनकर ।
तोते और मैंना मोर कोयलों की कूक सुनकर ।।
कहीं बुलबुल बोली ।।२।।
आँखें ना खुली तो क्यों जत्थे पै जत्थे आ रहे थे ।
क्यों हैदराबाद की जानिब को चले जा रहे थे ।
जहाँ नारायण स्वामी आसन जेल में जमा रहे थे ।
कहीं खुशहाल चन्द चाँदकरण के दल छा रहे थे ।।
कहीं धुरेन्द्र शास्त्री भी अपना रङ्ग जमा रहे थे ।
कहीं गुरुकुल के ब्रह्मचारी वेद मन्त्र गा रहे थे ।।
कहीं सिख भी उन प्यारी कृपालों को जगा रहे थे ।
जो सदियों सोलीं ।।३।।
हर एक वीर देश का बेदार हो रहा है फेर ।
सब में नये योबन का संचार हो रहा है फेर ।।
देश की गुलामी दूर करने का भी ध्यान हुआ ।
और हम पहले क्या थे सबको इसकोभी अभिमान हुआ ।।
हिन्दू और आरज कितने मुसलमान भाइयों ने ।
रंगने को तिरङ्गा झण्डा हिन्द के ईसाईयों ने ।।
भी पुड़ियाँ खोलीं ।।४।।

क्योंकि यह वह युग है जो सब पाखण्डों को दूर करके।
और दिमाग़ी गुलामी को बिलकुल चकनाचूर करके॥
शेरों जैसी हिन्द भी हुँकार भर रहा है आज।
तुर्किस्तान मुर्दों को भी खड़ा कर रहा है आज॥
इसी तरह रूस ने भी अपने सब ढकोसलों को।
दिमाग़ी गुलामी के सब पस्त करके हौसलों को॥
शुभ डगरी टोहलीं ॥५॥
इस नवयुग के अन्दर आने वालों को यह ध्यान रहे।
अन्ध विश्वासों का कहीं कोई ना निशान रहे॥
क्यों कि जो कोई जाति अन्ध विश्वास में फँस जायगी।
और दिमाग़ी गुलामी के कीचड़ बीच फस जायगी॥
वह जाति सब जातियों की हमेशा गुलाम होगी।
हमेशा गुलाम क्या गुलामों की तिलाम होगी॥
कहै तेजसिंह वृथा काह को बढ़ावै तूल।
सौ बातों की बात किसी मौके पर ना जाना भूल॥

बहुत भूल होलीं ॥६॥

[समाप्तम्]

व्यौपारियों को खुश खबरी ?

छप गई !　　　छप गई !!　　　छप गई !!!

तेजसिंह ग्रन्थावली

विदित हो कि हमने भारत विख्यात आर्योपदेशक चौधरी तेजसिंहजी वर्मा कृत कुल पुस्तकों का कौपी राइट हमेशा के लिये वा क़ायदा ले लिया है और उनको अपने अधिकार से शुद्ध, सुन्दर तथा वृहद् संस्कार में छापा है।

तेजसिंह गीतांजलि	―)॥	तेजसिंह भजन रत्नावली	)॥।
तेजसिंह शतक प्रथम भाग	।)	तेजसिंह भजन मार्तण्ड	)॥।
तेजसिंह शतक द्वितीय भाग	।)	तेजसिंह भजन भास्कर	।)
तेजसिंह शतक तृतीय भाग	।)	निज़ाम हैदराबाद सत्याग्रह	)॥
तेजसिंह शतक चौथा भाग	।)		

उपरोक्त पुस्तकों में चौधरी तेजसिंह जी के ८० वर्ष के तजुर्बे के हिन्दू संगठन पाखण्ड खण्डन, पौराणिक पोल पुराण हिन्दुओं पर यवन अत्याचार सामाजिक कुरीतियाँ ऐतिहासिक वीरता तथा राष्ट्रीय आदि आदि विषय के थर्रा देने वाले रोमांचकारी भजन व गाने कूटकूट कर भरे हैं। अतः जनताने इनको बहुत पसंद किया है। इनका व्यौपाराना दाम भी कम से कम रखा गया है, ताकि जनता आसानी से खरीद सके। शीघ्र ही आर्डर भेजकर मँगावें वरना दूसरी आवृत्ति के लिये इंतज़ार करना पड़ेगा।

पुस्तक मिलने का पता—

हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

मुद्रक—पं० पुरुषोत्तमदास मुरलीधर शर्मा, हरीहर प्रेस, मथुरा।

मासिक पत्र **'संगीत'** वार्षिक मूल्य २)

प्रति मास ठीक समय पर निकल रहा है। ग्राहक संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है।

—क्योंकि—

भारतवर्ष में अपने ढंग का अकेला ही पत्र है और बहुत ही सस्ता है।

इसमें क्या-क्या मिलेगा ? सुनिये !

१—हारमोनियम पर निकालने के लिये तरह २ की राग-रागनियाँ तथा फिल्म गीतों के नोटेशन सरगमों सहित मिलेंगे।

२—हारमोनियम, तबला, बेला, बाँसुरी तथा सितार बजाने की शिक्षा घर बैठे मिलेगी।

३—तबले के ठेके और परन नक्शे सहित दिये जाते हैं और उनके बोल अंगुलियों से किस प्रकार निकाले जाँयगे ? यह भली प्रकार समझाया जाता है।

४ - प्रत्येक महीने नई-नई तर्जों के फिल्म-गीत तथा चुने हुए भजन वगैरा दिये जाते हैं।

५—प्रतिमास रेडियो और फ़िल्मों के नये नये गाने भी निकलते रहते हैं, इनके अलावा सङ्गीत विद्वानों व प्रोफ़ेसरों के लेख तथा नृत्यकला पर लेख निकलते रहते हैं।

प्रति वर्ष २०० पृष्ठ का एक विशेषांक निकलता है, जो स्थायी ग्राहकों को मुफ्त मिलता है।

हम दावे के साथ कहते हैं।

सङ्गीत का ज्ञान बढ़ाने वाला इससे सस्ता दूसरा साधन आपको नहीं मिलेगा, आप ग्राहक बनना चाहें तो आजही २) मनीआर्डर से भेज दीजिये। १ वर्षतक सङ्गीत आपको मिलता रहेगा, तथा २०० पृष्ठ का विशेषांक मुफ्त मिलेगा।

नमूना मुफ्त मंगाइये !

पता—मैनेजर "संगीत" (५) हाथरस—यू. पी.।